CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आलेख

Received 22.01.2023 | Reviewed 28.02.2023 | Accepted 18.03.2023

राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय का स्थापत्य कला पर प्रभाव – एक ऐतिहासिक अध्ययन

* डॉ. विमल कुमार कोली

मुख्य शब्द - *सिद्धमत, आयस, योगमार्ग, जलाशय, योगीशैल, चित्रांकन नाथ सम्प्रदाय, शिवष्ठक, वैरागपंथ, चीरागुरू, औधड़, धंधारी* आदि.

सारांश

राजस्थान की बहुरंगी संस्कृति के निर्माण और विकास में धर्म तत्व की प्रभावकारी भूमिका रही है। यहॉ के धार्मिक महापुरूषों ने अपने ज्ञान और साधना के बल पर विविधता में एकता की अनुभूति कर सम्पूर्ण प्रदेश को सामाजिक समरसता एवं मैत्री के सूत्र में बाँधने का उपदेश दिया है। राजस्थान के प्राचीन धार्मिक अवशेष उत्खन्न से प्राप्त मूर्तियों में देखे जा सकते हैं। विभिन्न हिन्दू ग्रन्थों में नाथ–सम्प्रदाय के अनेक नामों का उल्लेख मिलता है। 'हठयोग–प्रदीपिका की टीका' में ब्रह्मानन्द ने लिखा है कि सब नाथों में प्रथम आदिनाथ है जो स्वयं शिव ही है, राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय का प्रवेश आठवीं–नवीं शताब्दी में बप्पा रावल के समय मेवाड़ रियासत से माना जाता है। स्वयं बाप्पा रावल नाथ भक्त थे। इसी कालावधि में मेवाड़ क्षेत्र में नाथ सम्प्रदाय का प्रचार–प्रसार हो गया था। जयपुर एवं बीकानेर रियासत के राजाओं के नाथ साधुओं को राज्य में आश्रय दिया और चमत्कारों से प्रभावित होकर इनमें आस्था प्रकट की।

सामान्यतः 'नाथ' शब्द का अर्थ स्वामी, पति, मालिक आदि होता है। नाथ सम्प्रदाय का मुख्य धर्म योगाभ्यास है। योगमार्ग की पातंजल शाखा के अनुयायी योगी कहलाये तथा सिद्ध मार्ग पर चलने वाले 'सिद्धमत' कहलाये। कुछ विद्वान नाथ सम्प्रदाय एवं शैव सम्प्रदाय दोनों को एक ही मानते हैं। 'नाथ' शब्द 'नाथ सम्प्रदाय' के प्रवर्तक आदिनाथ भगवान शिव के लिए प्रयुक्त हुआ है। यहां के राज परिवारों ने शैव धर्म में रूचि दिखाई। जिसके प्रमाण मन्दिर निर्माण, भूमिदान सम्बन्धित दस्तावेजों में देखे जा सकते है। नाथ सम्प्रदाय मध्यकाल तक आते–आते एक महत्वपूर्ण सम्प्रदाय बन गया। यहाँ के अनेक राजाओं ने नाथ साधुओं को अपना गुरू माना है और नाथ साधुओं को प्रश्रय दिया। मारवाड़ के राजा मानसिंह ने नाथों के लिए खाने एवं रहने की व्यवस्था की थी। राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में 1803–1843 ई. के काल में नाथ सम्प्रदाय का प्रभाव यहाँ के मन्दिर, समाधि, मठ जलाशय, मूतियॉ चित्रकला, संगीत, हिन्दु–मुस्लिम समन्वय आदि में देखे जा सकते हैं। यहाँ नाथ सम्प्रदाय के अनेक सन्तों के मन्दिर देखने को मिलते हैं। जैसे – बैजनाथ महादेव का मन्दिर नाथ मन्दिर, धानमण्डी (जोधपुर) पदमसर (जोधपुर) का नाथ मन्दिर, नाथ सागर आदि महत्वपूर्ण है।

प्रस्तावना

राजस्थान में धार्मिक प्रवृत्तियां प्रारम्भ से ही रही है। जिसकी जानकारी उत्खनित मूर्तियों और अवशेषों में मिलती है। नाथ सम्प्रदाय का मूल उत्थान बहुत प्राचीन है। लगभग 10वीं शताब्दी तक नाथ सम्प्रदाय ने राजस्थान को प्रभावित किया है। यहाँ की

धरती न केवल वीरों एवं सतियों की भूमि रही वरण् सन्त महात्माओं, सिद्ध योगियों एवं भक्तों की जननी भी रही है। नाथ सम्प्रदाय की प्राचीनता का प्रमाण कबीर एवं तुलसीदास के पद्यों में भी देखा गया है। नाथ योगियों का राजस्थान लोकमानस पर गहरा प्रभाव देखा गया है। नाथ मत शैव मत है। नाथ पंथ में सर्वप्रथम भगवान आदिनाथ महादेव है। 'हठयोग प्रदीपिका' नामक ग्रन्थ में नाथ सम्प्रदाय के अनेक सिद्ध योगियों के नाम दिये गये हैं जिनके बारे में विश्वास किया जाता है।

नाथों का राजस्थान में प्रभाव व उनके फैलाव से सम्प्रदाय और जातियों का उद्भव व विकास का विचार करने पर हमारे सामने जोधपुर मारवाड़ का योगी शैल पर्वत सामने आता है जो वर्तमान मण्डोर के आसपास के क्षेत्र है। मारवाड़ की प्राचीन राजधानी मण्डोर थी। मण्डोर का किला योगी शैल पर्वत पर ही स्थित है। योगी शैल अर्थात् नागों का पहाड़।[1] मारवाड़ में नाथ सम्प्रदाय का प्रादुर्भाव राव सलखा के पुत्र मल्लीनाथ (वि.स. 1415–56) के समय देखा गया।[2] रावल मल्लीनाथ का जन्म एक योगी के आर्शीवाद से हुआ। सन् 1374 के अन्त में अपने पिता राव सलखा की मृत्यु के बाद ये खेड़ की गद्दी पर बैठे। इनके गुरू का नाम योगी रत्न था जिसने उन्हें माला पहनाकर अपना शिष्य बनाया और मल्लीनाथ का नाम दिया तथा रावल की उपाधि दी।[3]

नाथ पद का अर्थ 'ब्रह्मा पद' होता है। सनातन धर्म की विविद शाखाओं के धार्मिक ग्रन्थों में देवी–देवताओं की याचना, स्तुति या सम्बोधन के लिए 'हे नाथ' शब्द का प्रयोग हुआ है। 'गोरक्षा सिद्धान्त संग्रह' के अनुसार नाथ वह तत्व है जो अनादि रूप है। नाथ पंथ विशेष रूप से योगियों द्वारा प्रवर्तित हो। जिसका अर्थ सहजता प्राप्त करना है। इस सम्प्रदाय की सबसे बड़ी विशेषता है इसके अनुयायी आत्म अध्ययन विधि से योगाभ्यास करते हैं। शास्त्र अध्ययन इनके लिए गोण है। साधनों में केवल शरीर ही साधन है। पद और प्रतिष्ठा की आकांक्षा कोई भी इन्हें छू भी नहीं पाती है। मान अपमान की अनुभूति से भी परे है। सुख–दुःख यहां तक की ठण्डे और गर्म में भी भेद नहीं करते हैं। बाहरी आडम्बरों से मुक्त होते हैं। आदि गुरूगोरख नाथ कहते हैं – ''यदि कोई मेरे उपदेशों को मानता है तो सभी ग्रन्थों को कुएं में फैंक दो क्योंकि आधुनिक समय में जो स्वयं ही मुक्त नहीं है वे दूसरों को कैसे मोक्ष का उपदेश दे सकते हैं।[4]

वेशभूषा

नाथ सम्प्रदाय में दो भेद है – 'ओधड़ एवं दर्शनी'। 'बिना कान फाड़े' हुये औधड एवं कान फाड़े हुए योगी दर्शनी–जोगी कहलाते है। इनके विशेष व्यक्तित्व से इन योगियों को अनायास ही पहचान सकते हैं।[5] नाथ सम्प्रदाय के साधु लम्बी जटाएँ, फटे कान में कुण्डल, रूद्राक्ष माला, जनेऊ, मेखला, श्रंगी, धंधारी (एक प्रकार का चक्र), कंधा, सोठा, खप्पर, झोला, किरंगी शरीर में भष्म कमण्डल, तुम्बा आदि धारण करके रखते हैं।[6] नाथ सम्प्रदाय में कान के चीरा लगाकर कुन्डल धारण की परम्परा बहुत प्राचीन रही है। कान चीरने वाला चीरा गुरू कहलाता है।[7] नाथ सम्प्रदाय के प्रथम गुरू गोरखनाथ थे। गुरू गोरखनाथ द्वारा स्थापित 12 शाखाओं में से 2 राजस्थान में है। 1. बैराग पंथ – इनके प्रथम प्रचारक भर्तृहरि थे 2. माननाथी पंथ – इसका प्रधान केन्द्र जोधपुर का महामन्दिर है।[8]

नाथ सम्प्रदाय एवं स्थापत्य कला

समाज की अवधारणा जहाँ उसके साहित्य में प्रतिबिम्बित होती है, वहीं स्थापत्य शिल्प, चित्र, गायन मूर्तिकला आदि कलापरक सृजन द्वारा भी अभिव्यक्ति होती है। 8वीं शताब्दी में गोरखनाथ के अविर्भाव से नाथ सम्प्रदाय के सिद्धों, आचार्यों, गुरूओं और उनके शिष्यों के साधना, आवास, आहार–विहार, राजदरबार में गमनागमन, मान–सम्मान, उत्सवों ने समाज को विविध रूपों से प्रभावित किया है। इस काल में अनेक मठों, धूणों, समाधियों का भव्य निर्माण हुआ। भगवान शिव की विविधारूपा नाथ सम्प्रदाय द्वारा अनुमोदित मूर्तियों के साथ–साथ गुरूओं तथा आचार्यों की कलापूर्ण मूर्तियों की स्थापना होने लगी। वैष्णवों की तरह ही प्रस्तर फलकों की दीवारों पर नाथ लीलाओं का चित्रांकन होने लगा। इस प्रकार स्थापत्य, शिल्प, मूर्तिकला के साथ–साथ चित्रकला को भी प्रभावित किया। 19वीं शताब्दी में मारवाड़ के शासकों ने नाथ सम्प्रदाय सम्बन्धित स्थापत्य कला में विशेष अभिरूचि दिखाई है। जिसके अनुसार अनेक स्थानों पर नाथ सन्तों के मन्दिर बने।

मन्दिर स्थापत्य

जोधपुर महाराजा मानसिंह (1803–43 ई.) के काल में मारवाड़ के सभी 24 परगनों में नाथ मन्दिर बनवाए। 'जलंधर जसभूषण' ग्रन्थ में सिरे मन्दिर (जालौर) निज मन्दिर, मझ मन्दिर (गुलाब सागर) नव नाथ मन्दिर आदि मन्दिरों का उल्लेख है। जालौर का सिरे मन्दिर, चिड़ियानाथ मन्दिर (पालासनी) बैजनाथ मन्दिर (पालड़ी) तथा जोधपुर शहर स्थित अनेक मन्दिरों का अवलोकन किया। उदय मन्दिर, बड़ली नवनाथ मन्दिर, फुलेलाल मन्दिर, देवताओं की साल, देवनाथ समाधि आदि स्थापत्यकला के उत्कृष्ठ नमूने है। सम्वत् 1860 में जालौर में जलधंर नाथ मानसिंह के काल में आये महाराज के नाम पंथ की दीक्षा ली। दीक्षा के अवसर पर सिरे मन्दिर में 7 मोहरें तथा 570 रूपयें भेंट किए गए। मारवाड़ में नाथ सम्प्रदाय के विशाल सिरे मन्दिर का निर्माण माद्य शुक्ल 15 सम्वत 1862 में पूर्ण हुआ। इस मन्दिर में 3 लाख 51 हजार रूपये खर्च हुए।[9]

यहां का पुजारी देवनाथ के बड़े भाई हरनाथ को बनाया गया। 6 सम्वत् 1825 में राताढूंढा से सुआनाथ यहां जलन्धर नाथ मन्दिर में आए थे। यहां छोटा मन्दिर पहले से था। इस मन्दिर में जलन्धर नाथ की सफेद संगमरमर की मूर्ति एवं चरण चिन्ह स्थापित है। यहां की अन्य मूर्तियों में गोरखनाथ एवं मक्षेन्दनाथ की मूर्तियाँ भी है। यहा एक हाथी की एक प्रतिमा है जिस पर मानसिंह एवं जलन्धरनाथ दोनों बैठे दिखाया गया है। यहाँ स्थित चबूतरों पर सुआनाथ, भवानी नाथ, भैरूनाथ, हंसनाथ, कूलनाथ, सेवानाथ, पूरणनाथ, केसरनाथ आदि की समाधियाँ बनी हुई है। जालौर सिरे मन्दिर में मानसिंह के समय अनेक आयोजन हुए थे। यहॉ माद्य शुक्ल 11 संवत 1883 एवं 1892 को विशाल यज्ञ हुए जिनमें सामग्री तथा दक्षिणा आदि में 3 लाख 100 रूपये और 3000 अन्य खर्च हुए थे।[10] मानसिंह ने नाथ सम्प्रदाय हेतु मन्दिर में मूर्ति एवं जलाशय का निर्माण करवाया।

चिड़ियानाथ मन्दिर

राजस्थान के जोधपुर जिले से 40 किलोमीटर दूरी पर चिड़ियानाथ की धूनी स्थापित है। 1459 ई. में राव जोधा द्वारा जोधपुर दुर्ग की नींव चिडियाटूक पहाड़ी पर रखी गई। तब यहाँ से चिड़ियानाथ नामक तपस्वी को हटाया था। यही तपस्वी नाराज होकर पालासनी नामक स्थान पर पहुंचे, जहाँ धूनी स्थापित की।[11] यहाँ स्थित चिड़ियानाथ की समाधि पर अखण्ड ज्योत प्रज्जवलित होती है। प्रत्येक वर्ष होली के चौथे दिन यहाँ मेला भरता है। नवरात्रि के दिनों में दिन में चार बार पूजा होती है। पलासनी गाँव में चिड़ियानाथ, लक्कडनाथ, गुलाबनाथ, दरियानाथ आदि की समाधियाँ है।

रत्नेश्वर महादेव मन्दिर

यह शिवालय यहाँ की प्राचीन धरोहर है। जालौर के स्वतंत्र राठौर शासक रामरत्न द्वारा सन् 1708 ई. में उनके नाम पर यह शिव–बाण प्रतिष्ठित हुआ। यह शिवालय मन्दिर परिसर के पूर्वी भाग में एक वट वृक्ष के नीचे आया हुआ है। गर्भगृह में पार्वती, गणेश, जलन्धर नाथ, गोगादे ऋद्धि–सिद्धि की मूर्तियों के मध्य प्राचीन शिवलिंग है। यही अखण्ड ज्योति प्रज्जवलित होती है। इस पर 81 कलश है। कलात्मक, जाली झरोखों से युक्त, रंग–बिरंगे मार्बल भी शोभा से संयुक्त तथा चित्ताकर्षण चित्रकारी वाला यह शिवालय वास्तुकला का मनोहरी उदाहरण है।[12]

मन्दिर शिलालेख

सिरे मन्दिर के निर्माण एवं इससे सम्बन्धित अन्य सूचनाओं के संकेतक दो शिलालेख यहां उपलब्ध है। ये दोनों ही लाल पत्थर पर उत्कीर्ण है। जो चन्द्रकूप पर बने चबूतरे के बीचों बीच स्थापित है। शिलालेख क्रमांक : एक के अनुसार महाराजा मानसिंह के समय सिरे मन्दिर का निर्माण दाउनाथ ने करवाया। द्वितीय शिलालेख में सम्वत् 1860 काति सुदि 7 को पीर साहब देवनाथ को 'गुरूथापन' करने गॉव गोल व बाधोड़ा भेंट करने सं. 1873 को हरिनाथ के देवलोक होने तथा उसके पाट बैठने वाले दाउनाथ को मानसिंह द्वारा पाँच गाँव, हाथी, पालकी, छत्र, नगाड़ा, निशान आदि भेंट देने का उल्लेख है।[13]

बीकानेर क्षेत्र में नाथ सम्प्रदाय के अनेक मठ, मन्दिर, अखाड़े आदि है। गंगा शहर में शालू नाथ जी का मठ है जो शालूनाथ जी का घोरा कहलाता है। यहाँ शिक्षा की पाठशालाएँ भी चलती है। यहाँ नाथ सम्प्रदाय का प्राचीन स्थल नाथ सागर भी है। वर्तमान में यह स्थल शिव मन्दिर के रूप में है। सम्भवतः इसका निर्माण 15वीं से 16वीं शताब्दी के मध्य हुआ होगा। 30 फुट ऊँचे चबूतरे पर बने इस मन्दिर में कई भूमिगत स्थान है। मन्दिर में एक गर्भगृह है जहाँ चामुण्ड़ा की मूर्ति स्थापित है। साथ ही ऊपरी सिरे

पर शिवाष्टक प्रतीक पुनर्स्थापित किया गया प्रतीत होता है कि इसी क्षेत्र में प्रसिद्ध नाथपंथी साधुओं का एक स्थान नवलनाथ जी का मठ है। महाराजा गंगासिंह नवलनाथ जी को बीकानेर लाये थे और उनको सियाराम जी की गुफा में ठहराया था।

बीकानेर में लक्ष्मीनारायण के मन्दिर के पास पूर्व में नाथों का एक स्थान है। हाल ही में यहाँ कोई नाथ नहीं रहता। यही केदार नाथ जी की एक गुफा है जो जैन कॉलेज के पास है। फतेहपुर में अमृतनाथ जी प्रख्यात नाथ योगी हुए उनके शिष्य भानीनाथ ने चूरू के उत्तर में बीड़ में मठ की स्थापना की। इस मठ में गोरखनाथ, मच्छेन्द्रनाथ जी व अन्य योगियों की प्रतिमाएं है।[14]

नाथ मन्दिर धान मण्डी (जोधपुर)

जोधपुर शहर में धान मण्डी के अन्दर सं. 1868 रानी तुंवरी जी ने नाथ मन्दिर बनवाया। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा के समय श्री किशन जोशी को पालकी, मोतियाकण्ठी एवं वस्त्रादि उपहार स्वरूप भेंट किये।[15] प्रतिवर्ष यहां मन्दिर में मेले का आयोजन होता है। विभिन्न खम्भों पर बने हुए इस मन्दिर में ऊँचा गर्भगृह है। यहाँ सगमरमर की चोकी पर जलन्धर नाथ के चरण चिन्ह अंकित है तथा शिवलिंग व नन्दी पत्थर के बने हुए हैं। मन्दिर में पूजा कार्य नियमित होता है। प्रत्येक शिवरात्रि को यहाँ जागरण होता है। द्विमंजिला मन्दिर में जालीपाव, नारंगीपाव की समाधियाँ स्थापित है।

व्यास बावड़ी मन्दिर (जोधपुर)

जोधपुर शहर से दुर्ग के रास्ते में फूलेलाव नामक स्थान पर मानसिंह द्वारा मन्दिर बनवाने का उल्लेख मिलता है। यहीं व्यास बावड़ी के समीप फूलेश्वर महादेव का मन्दिर स्थित है। जहाँ पार्वती, गणेश तथा कार्तिकेय की मूर्तियाँ स्थापित है।[16]

बालसमन्द

जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने बालसमन्द पर नाथ मन्दिर बनवाया। वि.सं. 1866 को यहाँ भेंट न्यौछावर की थी तब यहाँ आयस जोरनाथ नियुक्त थे। इसके अलावा जोधपुर फुलेलाव मार्ग पर पूर्व आड़ा बाजार में एक नाथ मन्दिर स्थित है जो वर्तमान में देवस्थान के अधीन है। यहाँ संगमरमर के सिंहासन पर जलन्धर नाथ के चरण चिन्ह तथा मूर्तियाँ स्थापित है।

मण्डोर देवताओं की साल

यह वि.सं. 1776 के महाराजा अजीत सिंह के समय बनवायी गई। यहाँ मानसिंह ने जलन्धर नाथ एवं गोरखनाथ की मूर्तियाँ भी बनवायी थी।

आयस देवनाथ की समाधि एवं टांका (जोधपुर)

महाराज के गुरू आयसनाथ की हत्या के बाद उनको दुर्ग में जयपोल के पास समाधि दी गई थी। इस समाधि के पास पानी का टांका स्थित है। वर्तमान में यह समाधि एवं टांका दोनों ही लुप्त है। सोजती गेट के अन्दर कटोलिया हाउस के पास हवेली बनी हुई है। जहाँ पहले जलंधरनाथ के चरण चिन्ह, नन्दी तथा शिवलिंग स्थापित थे जो कुछ वर्षों पहले यहाँ से मोहनपुरा पिपलेश्वर मन्दिर में स्थापित करवा दिए गए। इन मन्दिर अवलोकनों से पता चलता है कि नाथों की मृत्यु के बाद इनके शव को दफनाकर उसी पर चबूतरा बनवा दिया जाता था और ऊपर से शिवलिंग स्थापित किया जाता था। ऐसे जोधपुर में अनेक मन्दिर है जैसे– विश्वनाथ (अखेराय तालाब) जगन्नाथ मन्दिर (चांदपोल के पास), मण्डलनाथ (मण्डोर), भूतनाथ, जबरनाथ (सिवाचीगेट), बाणनाथ (सुखानन्द बगेची) सिंद्धनाथ मन्दिर आदि। महाराज मानसिंह के नाथ आस्था को जन–जन तक पहुंचाया और नाथ इष्ट के अनेकों मन्दिर बनवाये।

नाथ मन्दिर का कुआँ एवं जलाशय

महिला बाग झालरे के पूर्व में नाथ जी के मन्दिर में एक कुआँ मानसिंह ने बनवाया था। जिसका पानी मन्दिर के पुजारी एवं जनानी ड्योढ़ी में रहने वाली रानियॉ, पडदायतें प्रयोग में लेती थी। महाराजा मानसिंह के नाम सम्प्रदा की श्रद्धा हेतु उनके लिए अनेक स्थानों पर जलाशयों का निर्माण करवाया। सन् 1804 में मारवाड़ में अकाल के समय मानसिंह ने यहाँ जल संसाधनों का प्रबन्ध करवाया।

नाथ मठ का कुआँ

सोजती गेट के वारिया मोहल्ले के किनारे मोहनपुरा रेल्वे पुलिया के पश्चिम में नाथों का मठ है। यहाँ एक कुंऐ का निर्माण महाराजा मानसिंह द्वारा करवाया गया था। वर्तमान में इसको पाट दिया गया है तथा उदय मन्दिर नाथ महल के सामने भिश्ति मोहल्ले के पास एक कुंआ स्थित है जो मानसिंह ने यहाँ के पुजारी भीमनाथ के लिए बनवाया था।

रघुनाथ बावड़ी एवं उदय मन्दिर मठ की बावड़ी

महा मन्दिर तीसरी पोल की बांयी तरफ एक बावड़ी है जो मानसिंह द्वारा बनवाई गई थी। महा मन्दिर में ही एक रंगराय की बावड़ी बनाने का उल्लेख है जो वर्तमान में लुप्त है। सन् 1821 में उदय मन्दिर का निर्माण हुआ तब एक बावड़ी बनवाई गई थी।

नाथें का बेरा तथा महामन्दिर झालरा

मानसिंह ने नाथों की जीविका तथा खेती करने के लिए कुआँ खुदवाया था। कुएँ में अधिक मात्रा में पानी होने से नाथसागर कहलाया। यह कुआँ वर्तमान में भी स्थित है। सन् 1804 में महाराजा मानसिंह के समय यहॉ झालरा बनवाया गया था। अकाल के समय 2 वर्ष तक यहॉ का पानी लोगों को पीने के काम आता था। सन् 1905 में तख्त सिंह के समय यहॉ के आयस लक्ष्मी नाथ द्वारा झालरें पर अरहट लगाकर हौज भरवाया जाता था। जोधपुर शहर की आसपास की जनता यहॉ से पानी ले जाती थी। ऐसा उल्लेख मिला है कि हौज के पास खाली मटकियाँ नि:शुल्क रखी जाती थी।[17]

मान सागर (मानसरोवर)

महाराजा मानसिंह ने नाथों के लिए एक तालाब बनवाया। उसके चारों तरफ दीवार होती थी। इस तालाब में मगराज जी के टांके से आगे तक की पहाड़ी के ढलान का पानी आता था। वर्तमान में बस्तियाँ बस जाने से तालाब का पानी दूषित हो गया। महाराज ने जालौर के सिंरे मन्दिर में भी जलस्त्रोत बनवाये जैसे मानसिंह द्वारा जलन्धरनाथ मन्दिर जालौर में कुण्ड बनवाया गया जिसका पानी अमृत के समान मीठा था। सिरे मन्दिर में मानसरोवर, अमृत वापि, कुंआ झालरा आदि है। यहॉ मानसिंह के पूर्व के दो जल स्त्रोत चन्द्रकूप एवं सूर्य कुण्ड स्थापित होने का उल्लेख है। जिसका उद्देश्य नाथ सम्प्रदाय के मन्दिरों, मठों में आने वाले दर्शनार्थियों, सेवकों, चाकरों की सुविधा हेतु था। महाराजा जसवंत सिंह के समय (1638–1678 ई.) मारवाड़ पर श्रीनाथ जी बल्लम्भ सम्प्रदाय का विशेष प्रभाव पड़ा।[18]

महाराज के पुत्र अजय सिंह जी द्वारा मण्डोर उद्यान परिसर में देवताओं की साल का निर्माण करवाया जिसमें तैंतीस करोड़ देवी–देवताओं का वास स्थान बनाया गया और एक विशाल चट्टान को काटकर 16 बड़ी मूर्तियां बनवायी जिनमें चामुण्ड़ा, जलन्धरनाथ, रावल मल्लीनाथ, पाबूजी रामदेव जी, हडबूजी, जम्मोजी मेहाजी, गोगाजी आदि देवी, देवताओं एवं महापुरूषों की मूर्तियॉ शामिल है।[19] राजस्थान के पंच पीरों का नाथों से जुड़ाव रहा है। मारवाड़ क्षेत्र में मण्डोर में स्थित देवताओं की साल में इन सभी की मूर्तियॉ स्थापित है। नाथ सम्प्रदाय के सिद्धों को 'पीर' नाम से प्रसिद्धियॉ मिली जैसे रामसा पीर गोगा जी को भी पीर कहा जाता है।[20] मेवाड़ के महाराणा कुम्भा ने देवपूजनार्थ अन्य देवताओं के साथ गोरखनाथ, मीननाथ, सिद्धनाथ आदि की मूर्तियाँ बनवायी। महाराणा कुम्भा के शासनकाल में इनकी पूजा का अत्यधिक प्रचार किया था। इसकी साधना हठयोग से सम्बन्धित थी।[21] महाराणा जयसिंह पर नाथों का बड़ा प्रभाव था। वे जब तक नाथों की मुद्राओं के दर्शन किए बिना दन्त मंजन नहीं करते थे।[22]

भित्ति चित्रांकन

राजस्थान के विभिन्न मन्दिरों एवं मठों में नाथ पंथ के धार्मिक चित्र अंकित है। जोधपुर के शासक मानसिंह ने अपनी अभिरूचि के अनेक नाथ भक्ति के ग्रन्थों का चित्र अंकित करवाया। इन चित्रों में गुरू जलंधरनाथ के चित्र, विभिन्न आयस ग्रन्थों के चित्र, उत्सवों के चित्र, पूजा भक्ति के चित्र, भित्ति चित्र आदि बनवाये गए। ये चित्र मारवाड़ चित्र शैली के हैं, जिन पर राजपूत शैली का प्रभाव देखा जा सकता है। सांस्कृतिक कार्यकलापों से ओतप्रोत इन चित्रों में तत्कालीन लोक जीवन की झांकी द्रष्टव्य होती है। इनके बने चित्रों में सिद्ध–सिद्धान्त पद्धति में सम्वत् 1851 में यौगिक पक्षों को लेकर 25 चित्र बनवाये गए जिनमें सुन्दर चित्रांकन है। नाथ चरित्र चित्रांकन में नाथ साधुओं की छवि को इंगित करते हुए सुन्दर चित्रकारी की है। शिव रहस्य चित्रांकन के अन्तर्गत हिम आच्छादित पर्वतों को प्रदर्शित करते हुये 101 चित्रों का निर्माण करवाया जिसमें पौराणिक कथाओं का दृश्यांकन है। मानसिंह ने

नाथ सम्प्रदायन्तर्गत शिव भक्ति के पुराण सम्बन्धी 109 चित्र तथा नाथ पुराण के 28 चित्र बनवाये थे। जिनमें चित्रांकन बार्डर सहित है।

नाथ सम्प्रदाय सम्बन्धी चित्रों में मतिराम का 'रसराज' नामक ग्रन्थ जिसमें 63 चित्र बनवाये गये थे। व्यक्ति चित्रों का निर्माण भी महाराजा द्वारा करवाया गया। इनमें लाडू नाथ, देवनाथ, जलधरनाथ तथा विभिन्न अवसरों पर स्वयं के साथ चित्र बनवाये गये। जोधपुर के नाथों के प्रमुख महामन्दिरों में भित्तियों पर मानसिंह द्वारा चित्र बनवाये गए, जिनमें चिडियानाथ, मल्लीनाथ, गोगा चौहान, गोपीचन्द, दलाचारण, रतन राठौड, गौड रामसिंह, भीमाचारण जेपसा राठौर कवियाणी आदि भक्त है। ये चित्र वर्तमान में काल कलवित हो रहे हैं। इसी तरह मन्दिर के अन्दर भी भित्तियों पर सूक्ष्म चित्रांकन है।

शेखावाटी अंचल में माननाथी सम्प्रदाय की परम्परा आज भी देखी जा सकती है। लक्ष्मणगढ़ में श्रद्धानाथ जी के आश्रम में बरसी एवं शिवरात्रि के पर्व पर मेले का आयोजन होता है। सिद्धयोगी अमृतनाथ विलक्षण अवधूत थे। फतहपुर–रामगढ़ मार्ग पर श्रीनाथ जी का आश्रम है। जहाँ नाथ जी ने 1912 से 1916 ई. तक चार वर्ष से एक आसन पर विश्राम किया।[23]

निष्कर्ष

राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय की देन की अगर बात करें तो यह कहा जा सकता है कि यहाँ के शासकों ने सम्प्रदाय को उच्च शिखर पर पहुंचाने का प्रयास किया। यहां स्थापत्य दृष्टिकोण से देखा जाये तो यहॉ विशाल मन्दिरों, हवेलियों, झालरों, मूर्तियों आदि का निर्माण हुआ। जिनमें शासकों द्वारा पूर्ण रूचि लेकर अपार धन खर्च किया। इसके अतिरिक्त नाथ सम्प्रदाय सम्बन्धी सैकड़ों चित्र, कागज और भित्तियों पर बनाये गये मारवाड़, जैसलमेर, बीकानेर, मेवाड़ आदि के शासकों के नाथपंथ के सांस्कृतिक आयामों को उच्च शिखर तक पहुंचाया। इन्होंने नाथों की आजीविका चलाने हेतु भूमि दान दिये।

जोधपुर के महाराजा मानसिंह का समय नाथयोगियों का स्वर्णिम काल कहा जाता है। मेवाड़ में नाथ आसनों की संख्या सर्वाधिक रही है। यहॉ नाथों के 185 आसन थे। इस सम्प्रदाय का यहाँ के जनमानस पर इतना प्रभाव पड़ा कि वे उनके प्रति गहरी आस्था रखने लगे और सम्पूर्ण क्षेत्र में मन्दिर, मठ आसन बनने लगे। राजस्थान के शासक विभिन्न अवसरों पर जैसे – जन्मदिन, होली, दीपावली आदि आयेाजनों पर नाथ पंथ के लिए दान–दक्षिणाएँ वस्त्र, नगदी आदि भेंट की जाती थी। राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय प्राचीन काल से आज तक अपनी संस्कृति, साहित्य मार्गदर्शन अपने सिद्धान्तों विश्वासों के साथ हर क्षेत्र में प्रतिष्ठित है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. रामकरण आसोपा, मारवाड़ का संक्षिप्त इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर, 1931, पृष्ठ 7
2. डॉ हुकम सिंह भाटी, भारत में नाथा का आसण, राजस्थानी शोध संस्थान, चोपासनी, 2003, पृष्ठ 65
3. डॉ. बी.एल. शर्मा, सिरे मन्दिर, राजस्थान ग्रन्थागार, जोधपुर, 2013, पृष्ठ 257
4. गोपीनाथ कविराज, गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह, बनारस, 1925, पृष्ठ 65
5 मुकेश शर्मा, राजस्थान के नाथ सम्प्रदाय और साहित्य, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 2001, पृष्ठ 83
6. महेश चन्द प्रबोध, चन्द्रोदय, देवाश्रम आरा, 1945, पृष्ठ 312
7 मुंशी हरदयाल सिंह रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ बाबत् सन् 1891, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर, पृष्ठ 244
8. पं. परशुराम चतुर्वेदी, उत्तरी भारत की सन्त परम्परा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, प्रयास, 1951, प्रथम संस्करण, पृष्ठ 58–59
9. डॉ. रघुवीर सिंह (सं.) जोधपुर, राज्य री ख्यात, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, 1988, पृष्ठ 27
10. गोविन्द सिंह राठौर, मारवाड़ की सांस्कृतिक धरोहर, सुघन प्रकाशन, जोधपुर, 1998, पृष्ठ 228
11. डॉ. जी.एच. ओझा, जोधपुर राज्य का इतिहास, भाग–2, राजस्थानी ग्रन्थागार, 1999, पृष्ठ 78

12. ग्र. 1510 : गु.स. 2 कः परचावली : पत्र 120 : महाराजा मानसिंह, पुस्तक प्रकाशन, जोधपुर

13. मुकेश शर्मा (प्र.स.) राजस्थान के नाथ सम्प्रदाय और साहित्य, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, 1997, पृष्ठ 62, 63 एवं मन्दिर शिलालेख क्रमांक 1, 2

14. डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व्यास, बीकानेर क्षेत्र के संत महात्मा एवं वही उपर्युक्त पृष्ठ 51–56

15. श्री बद्री प्रसाद साकरिया (स.) मुहता नैणसी री ख्यात, राजस्थान ओरियन्टल रिसर्च इंस्टीट्यूट, जोधपुर, 1960, पृष्ठ 58

16. डॉ. गोरी शंकर हीराचन्द ओझा, जोधपुर, राज्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 1999, पृष्ठ 120

17. वही, पृष्ठ 122

18. आर.ए. अग्रवाल, मारवाड़ म्यूरल्स, पृष्ठ 13

19. मोहनलाल गुप्ता, जोधपुर जिले का सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, नवभारत प्रकाशन, जोधपुर, 2004, पृष्ठ 58

20. कमल किशोर सांखला, राजस्थान में नाथ सम्प्रदाय का सांस्कृतिक इतिहास, मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, जोधपुर, 2011, पृष्ठ 170

21. संगीतराज, नत्य रत्नकोश – प्रथम परीक्षण श्लोक, 157–158, पृष्ठ 4

22. शिवचरण मेनारिया – प्रकाशित लेख, द जनरल ऑफ राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ हि.रि. भाग–4, अंक–3, पष्ठ 40–41

23. प्रकाशनाथ 'तंत्रेश' राजस्थान का नाथ सम्प्रदाय, श्री सरस्वती प्रकाशन, अजमेर, 2013, पृष्ठ 257–58

Corresponding Author

*** डॉ. विमल कुमार कोली**

व्याख्याता (इतिहास)

माध्यमिक शिक्षा विभाग, बीकानेर, राजस्थान

Email-vkkoli1982@gmail.com, Mobile- 9887308072